नरेंद्र कौर छाबड़ा

ई-मेलnarender.chhabda@gmail.com

जीने की राह

9:25 की लोकल में आशा के विपरीत अमन को सीट मिल गई। वह बैठा ही था कि ताली पीटते हुए किन्नर रेशमा उसके सम्मुख आन खड़ी हुई—"क्या बात है अमन बाबू... तीन-चार दिनों से दिखाई नहीं दिए..."

"हाँ, सर्दी-बुखार हो गया था। वर्क फ्रॉम होम ही करता रहा। आप कैसे हो ?" अमन ने हमेशा की तरह अपनत्व जताते हुए कहा।

"अच्छे हैं। आपको अच्छी खबर देनी थी इसलिए रोजाना आपका इंतजार करती रही...." रेशमा के चेहरे पर मुस्कुराहटभरी चमक उभर आई।

"हाँ बोलो ना..." अमन के कहते ही वह उत्साहित हो बताने लगी—"आप हमेशा कहते थे ना—कोई काम करो; तो हमें काम मिल गया है। मैंने और कुसुम ने मिलकर चाय का ठेला लगा लिया है। हम दोनों मिलकर चाय बनाते हैं, मसाले वाली। शुरू में कुछ दिक्कतें आईं। लोग कन्नी काट निकल जाते थे। फिर धीरे-धीरे सब ठीक हो गया। अब तो हमारी चाय को लोग बहुत पसंद कर रहे हैं। अच्छी बिक्री हो रही है। अब फुटपाथ, लोकल, रिक्शे की सवारियों को रोककर पैसे माँगने का धंधा छोड़ दिया। बहुत जी ली लोगों की फटकार, ताने, मजाक, अश्लील इशारों से भरी जिल्लत भरी जिंदगी। अब किसी के आगे हाथ नहीं फैलाएंगे ....." कहते रहते उसके चेहरे पर स्वाभिमान के भाव आ गए थे।

" यह तो सचमुच बहुत खुशी की बात है ..." अमन ने 50 का नोट पर्स से निकाला तो रेशमा फ़ौरन बोली—"बस अमन बाबू, आपने मेरी जो मदद की, मुझे जीने की राह दिखाई, सहयोग दिया, वह कभी नहीं भूल सकती। इसी लोकल में हर व्यक्ति हमारी तरफ हिकारत से देखता था मानो हम इंसान ही नहीं। प्रकृति ने हमारे साथ अन्याय किया यह हमारा दोष तो नहीं ना ! पर आप सबसे अलग हो। हमारे दर्द को जाना, हमारी भावनाओं को समझा, हमें हमेशा कुछ मिनट का ही सही वक्त दिया, बातचीत की। एक दोस्त की तरह हमें समझाया, आर्थिक सहयोग दिया। मैंने तो यहाँ तक सुना, मुझसे जब आप बातें करते थे, लोग कहते थे—"किसको मुँह लगा रहे हो ? तुम्हें नहीं पता ये लोग तुम्हारे पीछे ही पड़ जाएँगे..." कितनी हिकारत से हमें देखते थे। आप केवल मुस्कुरा देते थे। फिर एक दिन आपने कह दिया था—"वे भी तो इंसान हैं। क्या उन्हें इतना भी अधिकार नहीं कि हम लोगों से बातचीत कर सकें...अपने कुछ दर्द, परेशानियाँ हमें सुनाकर अगर वे हल्कापन महसूस करते हैं तो उसमें क्या आपत्ति है? दस, बीस, पच्चीस, पचास रुपए उन्हें देने से हम गरीब तो नहीं हो जाएँगे। उनके पास आय का जरिया ही कहाँ है? समाज को उनके बारे में भी तो सोचना चाहिए ..." आपकी बातों का असर यह हुआ कि अब लोगों ने हिकारत से देखना छोड़ दिया था और हमारी आय भी बढ़ गई। फिर कुसुम के साथ सलाह की और चाय का ठेला लगाने की योजना बना ली। वह भी इस जिल्लतभरी जिंदगी से बहुत दुखी थी। हम दोनों बहुत खुश हैं ..."

अमन ने 50 का नोट उसके हाथ में थमाया—"इसे रखो, तुम्हारी दुकान के लिए शगुन है। और हाँ, जब भी समय मिला, मैं चाय पीने जरूर आऊँगा...."

रेशमा ने अमन के सिर पर हाथ रख आशीर्वादों की झड़ी लगा दी। वह नखशिख तक उन दुआओं में भीगता रहा तृप्त होता रहा।